श्री राम चन्द्र मिशन
# एकोज़ इंडिया
सितम्बर २००९ | केवल निजी वितरण के लिये | भाग २,अंक ५

प्रिय बहनों और भाइयों,

प्रणाम।

यह हम सबके लिये हर्षोल्लास भरा अवसर था जब तिरुपुर में गुरुदेव के जन्मदिवस समारोह पर एकोज़ इंडिया के स्टाल पर हमें बहुत सारे अभ्यासियों से मिलने का मौका मिला।

हमें यह बताते हुये खुशी हो रही है कि ३५० से भी ज्यादा अभ्यासियों ने विभिन्न भाषाओं में एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर की सदस्यता ली।

एकोज़ इंडिया के समन्वयकों व स्वयंसेवको की एक बैठक भी हुई जिसमें हमें न्यूज़लेटर (समाचार–पत्र) के वितरण और समन्वय से सम्बंधित समस्याओं को जानने में मद्द मिली।

इस अंक में, १२ अगस्त को पूरे देश भर में हुये अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम पर एक रिपोर्ट है। इसे संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के स्मरण में मनाया गया।

ज़ोनल समाचार जैसे इंदौर (एम. पी.) में प्रशिक्षक मीटिंग, चित्तानूर ( ए. पी. ) में मिशन की गतिविधियों की शुरुआत, रामगढ़ ( झारखंड़ ) में ध्यानकक्ष का उद्घाटन, जन–सभा, और विभिन्न ज़ोन में अभ्यासियों के लिये आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को इस अंक में सम्मिलित किया गया है।

हम आशा करतें हैं कि हमारे सभी पाठक इसको पढ़कर आनन्द उठायेंगे तथा जैसाकि गुरुदेव सदैव कहतें हैं – ' पढ़ो और आनन्द लो ' तथा ' करो और महसूस करो।'

आदरसहित
सम्पादकीय दल

## चेन्नई

पूज्य गुरुदेव, तिरुपुर में अपने जन्मदिन समारोह के पश्चात ३ अगस्त को चेन्नई पहुँचें। हवाई–अड्डे पर एकत्रित अभ्यासियों ने उनका बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्हें किसी कारणवश कार तक पहुँचने के लिये काफी लम्बी दूरी तक चलना पड़ा और गुरुदेव उसमें भी आनन्दित होते प्रतीत हो रहे थे। यह प्रत्येक अभ्यासी के लिये एक सीखने लायक सबक है कि वें किस प्रकार अपने सामनें आयी हर बड़ी या छोटी चुनौती का सामना करने के लिये अपनें आपको हर परिस्थिति में कैसे ढ़ाल लेते हैं।

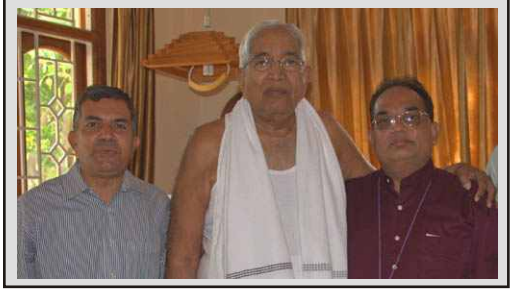

'यादों की गलियों में' नामक किताब में गुरुदेव ने जबलपुर में अपने लड़कपन के दिनों और क्राइस्ट चर्च स्कूल में अपने स्कूल के दिनों के बारें में लिखा है। अतः यह बहुत ही आनन्दायक क्षण था जब उनकी मातृ संस्था के वर्तमान प्रधानाचार्य ने उन्हें ४ अगस्त को फोन किया।

क्राइस्ट चर्च स्कूल, वरिष्ठ माध्यामिक स्कूल, जबलपुर के प्रधानाचार्य श्री एल. मैथ्यू, उत्तर–भारत की एक चर्च के सम्मानित बिशप डा. पी. सी. सिंघ के साथ आयें जोकि जबलपुर सूबा और सी एन आई स्कूल के चेयरमैन हैं। गुरुदेव ने जबलपुर में उनके स्कूल में बिताये हुये दिनों को याद करते हुये उनके साथ कुछ समय बिताया।

अतिथियों ने आश्रम–भ्रमण के दौरान वहाँ के दिव्य वातावरण पर टिप्पणी की और वहाँ आने पर अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर की।

५ अगस्त को रक्षा–बन्धन का दिन था। बच्चों समेत बहुत सारे अभ्यासियों ने उनकी कलाई पर राखियाँ बाँधी और उन्होंने बिना किसी को निराश किये, खुशी के साथ उसे स्वीकार किया। शाम को गोल्फ कार्ट में आश्रम के दौरे के समय भी बहुत सारे अभ्यासियों ने उन्हें मिठाई प्रस्तुत की और राखियाँ बाँधी।

१३ से १६ अगस्त के लम्बें सप्ताहांत में बहुत सारे अभ्यासी चेन्नई आये। १३ तारीख को जन्माष्टमी के दिन वहाँ पर उपस्थित सभी अभ्यासियों को हर्षित करते हुये गुरुदेव ने ध्यानकक्ष में आकर सत्संग करवाया। १५ अगस्त, भारत का स्वतंत्रता दिवस होने के कारण स्थानीय छुट्टी थी। उस दिन भी गुरुदेव ने ध्यानकक्ष में सत्संग कराया और भाई शशांक, जोकि जाने–माने वाँसुरी वादक हैं, ने सत्संग के बाद मास्टर–काटेज में अपने वाँसुरी–वादन से सबको सम्मोहित कर लिया। यह बहुत ही उच्च कोटि का वाँसुरी–वादन था और गुरुदेव ने इस कार्यक्रम का आनन्द लिया।

१६ अगस्त को गुरुदेव ७ बजकर १० मिनट पर ही ध्यानकक्ष में आ गयें और अभ्यासियों के आने तक काफी धैर्यपूर्वक इंतजार करते रहे। उन्हें सत्संग शुरू कराने के लिये ७.२५ तक इंतजार करना पड़ा। इस बात पर जोर डालते हुये निम्नलिखित घोषणा हुई : " अभ्यासी होना एक बहुत बड़ा उपहार है; सत्संग में शामिल होना इससे भी बड़ा उपहार है और गुरुदेव की उपस्थिति में सत्संग में शामिल होना एक अतुल्य उपहार है। और यह हर अभ्यासी का कर्तव्य है कि वह ध्यानकक्ष में गुरुदेव (या प्रशिक्षक ) के आनें से कम से कम ३० मिनट पहले हॉल में आ जाये।

श्री राम चन्द्र मिशन
एकोज़ इंडिया
मालिक का दौरा/मुख्यालय की खबरें
सितम्बर २००९ केवल निजी वितरण के लिये भाग २,अंक ५

मालिक या प्रशिक्षक को प्रतीक्षा करवाना शोभा नहीं देता। हमें पहले आकर सत्संग में प्रदान किए जाने वाले दिव्य उपहार को ग्रहण करने के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए।" इस घोषणा का असर आगामी सप्ताह में महसूस हुआ, जब मालिक के आगमन से पहले ही लगभग पूरा हॉल भर चुका था।

स्वाइन फ्लू के प्रकोप के चलते मालिक ने अपनी यात्रा के कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। पूरे भारत से अभ्यासी उनसे मिलने आ रहे हैं और इसकी वजह से मालिक काफी व्यस्त हैं। उनका प्रशासनिक कार्य, प्रशिक्षकों को तैयार करना, अपने काटेज पर जमा अभ्यासियों से मिलना... उनके कार्यों की सूची का अंत नहीं है। उनका कार्य अनवरत चलता रहता है और स्वयं के लिए (तथा इस प्रक्रिया में दूसरों के लिए) निर्धारित उनके मापदंड अनुकरणीय हैं। हमें उनकी कार्य–नीति तथा प्रत्येक छोटे–छोटे कार्यों की बारीकियों को ध्यान में रखने की प्रवृत्ति से बहुत कुछ सीखना चाहियें।

अभ्यासियों के साथ मालिक की अनौपचारिक वार्तालाप से कुछ बातें:–

१) टाइम्स ऑफ इन्डिया (चेन्नई संस्करण, २३ अगस्त, रविवार) में छपे एक समाचार में उल्लेख था कि चेन्नई उच्च न्यायालय ने वाहन (कार/२ पहिया) और मोबाइल फोन ( गाड़ी चलाते/सवारी करते समय यदि चालक/सवार मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते पाया जाए तो) को जब्त करने का आदेश दिया है, इसको पढ़कर मालिक ने साफ शब्दों में कहा, "मैं सबको मना करता हूँ कि वह वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग न करें; यदि कॉल स्वीकार करनी हो तो वाहन को सड़क के किनारे लगायें और फिर कॉल स्वीकार करें।"

२) क्षमा करना और भूलना : जब एक अभ्यासी ने मालिक से जानना चाहा, "जब कोई अपनी गलती पर पश्चाताप करे तो क्या आप उस व्यक्ति को क्षमा करके भूल जाते हैं?" मालिक ने जबाब दिया, "मैं हमेशा तत्काल क्षमा कर देता हूँ; लेकिन भूलना पूरी तरह उस व्यक्ति के हाथ में होता है। जब तक वह उस स्मृति को ढ़ोता रहता है, तब तक मेरे लिए भूल पाना संभव नहीं होता।

३) अनुशासन पर: " अनुशासन की उपज आत्म–प्रेम से होती है; अनुशासनहीनता की उपज आत्म–भोग से होती है।"

## घोषणाएं

### भोजन करने से पहले की प्रार्थना पर मालिक का आग्रह:

मोलेना आश्रम, अगस्त २००३

"हम अब भी अपने भोजन और उसकी शुद्धता के बारें में चिंता करते हैं। मैं बीमारी से बचाव के लिए खाद्यान्न की शुद्धि की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं तो तथाकथित आध्यात्मिक शुद्धि की बात कर रहा हूँ।

बाबूजी ने हमें प्रत्येक चीज को स्वादिष्ट और आध्यात्मिक तौर पर अपने लिए हितकारी बनाने का तरीका बताया था। उन्होंने बताया कि भोजन करने से पहले क्षण भर के लिए ध्यान करें और अपने मालिक को उसे प्रस्तुत करें। मुझे नहीं लगता कि कोई भी इसे करता है, एक भी नही... तो इसका प्रयास करें। चाहे आप सेंडविच खाएं या बिस्कुट खाएं, क्षण भर के लिए अपनी आँखें बंद करें और सोचें कि हमारे महान मालिक इसे ग्रहण कर रहें हैं। तब आप पायेंगे कि यह अमृत तुल्य बन गया है। अब न यह भारतीय भोजन है, न अमेरिकन भोजन, अब यह भोजन नहीं बल्कि अमृत बन गया है और अमृत सबका होता है। अमृत; ईसाई–अमृत, हिंदू–अमृत, मुस्लिम–अमृत और बौद्ध–अमृत नहीं होता। अमृत देवताओं का होता है।

### छात्रवृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम – भारत

भारतीय अभ्यासियों के लिए प्रथम छात्रवृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन २६ सितम्बर से २ अक्टूबर २००९ तक कोलकाता आश्रम में किया जायेगा। यह कार्यक्रम आवासीय तथा अंग्रेजी भाषा में होगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य नये तथा उभरते केंद्रों के अभ्यासियों को प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना है ताकि वे न केवल अपनी नियमित साधना में बल्कि अपनी भरपूर योग्यता के अनुसार मिशन की हर तरह से सेवा करने में अधिक से अधिक सक्रिय हों।

इस कार्यक्रम को प्रारंभ करने के लिए पूर्व उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, उत्तर–पूर्वी राज्यों, असम, बिहार, झारखंड, उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ के ज़ोनल प्रभारी अपने–अपने ज़ोन से उम्मीदवारों का चयन करके इस कार्यक्रम के लिए उनके आवेदन भेजेंगे। प्रथम कार्यक्रम के लिए ३०–३५ अभ्यासियों का चयन करके एक बैच बनाया जायेगा।

### रिट्रीट सेंटर की समय–सारणियाँ

१ अक्टूबर २००९ के प्रारम्भ से एस. एम. एस. एफ़ रिट्रीट सेंटरों के उपयोग में परिवर्तन किया जाएगा।

अभ्यासी भाईयों और बहनों को वैकल्पिक महीनों में अलग–अलग आबंटित किया जाएगा। आगामी महीनें – अक्टूबर २००९, दिसम्बर २००९ के साथ–साथ फरवरी, अप्रैल, जून, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर २०१० पूर्णत: अभ्यासी बहनों के लिए होंगे।

नवम्बर २००९ तथा जनवरी, मार्च, मई, जुलाई और नवम्बर २०१० पूर्णत: अभ्यासी भाईयों के लिए होंगे।

जिनको पहले से अनुमति मिल चुकी है; वे सब नए दिशानिर्देशों के अनुसार नई तारीखें निर्धारित करवाएं। उन्हें व्यक्तिगत रूप से एक अलग ई–मेल भेजा जायेगा। इससे सम्बंधित कोई भी प्रश्न retreat@sahajmarg.org इस पर भेजें जा सकतें हैं। इस बात पर गौर करें कि रिट्रीट के दौरान किसी भी समय बच्चों को जाने की अनुमति नहीं है।

## क्रेस्ट, बेंगलोर – तीसरी वर्षगांठ

क्रेस्ट, बेंगलोर ने ९ अगस्त को बेंगलोर के स्वयंसेवकों, सहायकों तथा प्रशिक्षकगणों के साथ सामुदायिक मिलन का आयोजन करके अपनी तीसरी वर्षगांठ मनाई। ९ अगस्त २००६ को मालिक ने दो सप्ताह की सेमिनार के साथ क्रेस्ट, बेंगलौर का उद्घाटन किया था।

इस सामुदायिक–मिलन का शुभारंभ प्रातःकालीन सत्संग के साथ हुआ और दोपहर के भोजन के साथ इसका समापन हुआ। लगभग ११० अभ्यासी इसे मनाने के लिये एकत्रित हुए थे। क्रेस्ट के निर्देशक भाई आर. जगन्नाथन ने क्रेस्ट की विभिन्न गतिविधियों पर एक रिपोर्ट पेश की।

"मिशन की सेवा और इसके विभिन्न पक्ष " विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया था। विशेषज्ञों के समूह में भाई भास्कर राव, भाई के. टी. मंजुनाथ तथा भाई बी. जी. सुब्रमन्या थे। भाई बी. श्रीनिवास इसके सूत्रधार थे। सामने आये कई मुद्दों पर विशेषज्ञों के समूह ने अपने विचार व्यक्त किए। श्रोताओं ने अपने कुछ प्रश्न पूछे और उन पर स्पष्टीकरण प्राप्त किया। परिचर्चा में नियमित साधना के महत्व तथा सेवा करते हुए मालिक के प्रति पूर्ण समर्पण के महत्व को उजागर किया।

इसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें भक्ति–संगीत, बाँसुरी–वादन तथा "वास्तविक मूल्य" पर एक नाट्य–प्रस्तुति पेश की गई।

सहायक निर्देशक भाई प्रमोद जोहरी ने आभार व्यक्त किया। हर एक के मन में उत्साह के साथ काम करते रहने व मालिक के प्रति प्रेम की एक नई तरंग का अहसास हुआ।

## रामगढ़, झारखंड़ में ध्यानकक्ष का उद्घाटन

शनिवार, ८ अगस्त का दिन रामगढ़ केन्द्र के अभ्यासियों के लिए हर्षोल्लास का दिन था। मालिक की कृपा से, ध्यानकक्ष का उद्घाटन जोनल प्रभारी श्री जी. एम. भट्नागर और विभिन्न केन्द्रों से पधारे अभ्यासियों की मौज़ूदगी में श्री राजनाथ तिवारी द्वारा किया गया जो १९७० से सहजमार्ग की साधना कर रहें हैं। इसके उपरान्त सत्संग हुआ।

नाश्ते के बाद शुरू हुए आधारभूत अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम में चार मुख्य विषयों ध्यान, सफाई, प्रार्थना और सतत स्मरण पर चर्चा हुई। भाई परमानंद पांडे और बहन अल्पना तिवारी इस सत्र के शिक्षक सदस्य थे। दूसरे सत्र में राँची केंद्र की बहन अल्पना तिवारी ने अभ्यासियों के लिए एक प्रश्नोत्तरी आयोजित की और उसके बाद " व्हाट इज मास्टर? " ( मालिक क्या है? ) शीर्षक की सी. डी. दिखाई गई।

उसी समय दूसरे कक्ष में ज़ोन नं. १७ की प्रशिक्षकों की मीटिंग भी हुई। परिचर्चा के कुछेक मुख्य बिंदु इस प्रकार थे:– तिरुपुर में आयोजित प्रशिक्षक–मीटिंग के मद्देनज़र प्रशिक्षकों की आचार–संहिता, मासिक तथा जोनल रिपोर्ट कैलैन्डर, केन्द्रों के विकास के लिये गतिविधियाँ, स्मृति के कार्यक्रम, शिक्षक सदस्यों का विकास, वी. बी. एस. ई तथा एकोज़ न्यूज़लेटर आदि। सायंकालीन सत्संग के बाद बच्चों ने भक्ति–गीत पेश किए।

दूसरे दिन का कार्यक्रम प्रातःकालीन सत्संग के साथ शुरू हुआ। सत्संग के बाद जन–सभा का आयोजन किया गया जिसमें करीब ३० लोगों ने भाग लिया। १५ नए अभ्यासियों ने अभ्यास शुरू किया तथा पाँच लोगों के शीघ्र ही शुरू करने की संभावना हैं। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में करीब दो सौ अभ्यासियों ने भाग लिया।

## गोदावरीखानी, आन्ध्र प्रदेश– भंडारे से शिक्षा

गोदावरीखानी केन्द्र में रविवार ९ अगस्त, २००९ को पूरे दिन का कार्यक्रम था जिसमें लगभग १२५ अभ्यासियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तिरुपुर में मालिक के जन्मोत्सव के दौरान प्राप्त अनुभवों और सीखे हुये सबकों का आदान–प्रदान करना था।

अभ्यासियों द्वारा व्यक्त किए गए आम अनुभव और उनसे प्राप्त सबक इस प्रकार हैं:–

* भंडारे के दौरान अधिकांश समय मालिक के साथ आंतरिक सानिध्य का अहसास, भले ही व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात हुई हो या नहीं।

* समारोह से लौटने के बाद हृदय में अधिक तीव्र लालसा, सांसारिक वस्तुओं के प्रति राग में कमी।

* भंडारे के बाद व्यक्तिगत तथा सामूहिक ध्यान में अधिक गहन शांति का आभास।

* अभ्यासियों को यह बात भीतर तक छू गई कि समारोह–स्थल पर थोड़े से स्वयंसेवकों द्वारा अच्छे टीम–कार्य को दर्शाते हुये इतना बड़ा कार्य सम्पन्न किया गया। यही मिलजुल कर कार्य करने की भावना स्थानीय स्तर पर भी दिखाई देनी चाहिए।

* प्रत्येक व्यक्ति ने भाईचारे की सच्ची भावना को आत्मसात करने की आवश्यकता जताई जहाँ स्थानीय अभ्यासियों और अन्य केन्द्रों से आये अभ्यासियों में कोई भेदभाव न हो। जैसाकि तिरुपुर में स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

# अखिल भारतीय निबंध लेखन कार्यक्रम

गुरुदेव आज के बच्चों और युवाओं को काफी महत्व देते हैं क्योंकि वे इमारत की ईटों की तरह हैं जो भविष्य को आकार देंगें। निबंध लेखन का कार्यक्रम १२ अगस्त को शिक्षण–संस्थानों और श्री रामचन्द्र मिशन के केन्द्रों में, संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के दिन आयोजित किया गया। इसे श्री रामचन्द्र मिशन और संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र (भारत और भूटान) के सहयोग से आयोजित किया गया। इसके आयोजन का उद्देश्य बच्चों और युवाओं को प्रेम और सहिष्णुता जैसे मूल्यों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित और उत्साहित करना था। मानवता के एकीकरण और भाषा के बंधन को तोड़ने के लिए इस कार्यक्रम को १३ क्षेत्रीय भाषाओं में आयोजित किया गया। इसे देश भर के सारे स्कूलों और कॉलजों ने बड़े उत्साह से अपनाया।

अलुवा में स्थित केरल के ज़ोनल आश्रम में विभिन्न केन्द्रों से आये १४० स्वयंसेवको को प्रशिक्षण दिया गया। राज्य के विभिन्न भागों से करीब १००० स्कूलों और कॉलजों ने इसमें हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम के पोस्टर प्रमुख जगहों पर लगाये गये थे और उनके सरल परन्तु विचार–उत्प्रेरक विषयों ने छात्रों, उनके माता–पिता और शिक्षकों के मन में जिज्ञासा व उत्सुकता पैदा कर दी। और उनमें से बहुत से लोग मिशन के बारें में और जानकारी लेना चाह रहे थे। कुछ स्कूलों ने बच्चों में मूल्यों को आत्मसात कराने हेतु इस सत्र के अनुसरण का आग्रह किया। स्वयंसेवक अब निबंधो को एकत्रित करने की प्रक्रिया में व्यस्त हैं जिसकी जाँच सितम्बर में क्षेत्रीय स्तर पर अलुवा के ज़ोनल आश्रम में होगी। चुनें हुये निबंध राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यांकन के लिए भेजे जायेंगे।

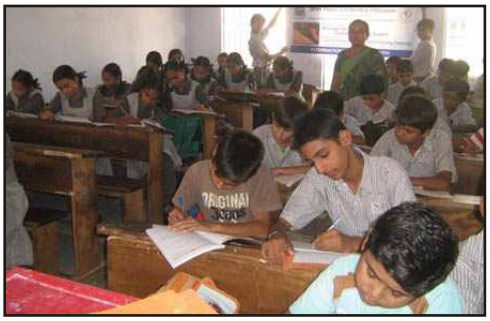

अहमदाबाद में २०३ संस्थानों ने भाग लिया। गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी में लगभग ९७०० निबंध अपेक्षित हैं। केन्द्र को ६ भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया है और स्वयंसेवकों की टीम, उनको सौंपें गये काम में व्यस्त है। इस तरह की पहल अहमदाबाद केन्द्र में पहली बार हुई है और प्रमुख संस्थानों से बड़ी उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है।

वदोदरा केन्द्र में लगभग ५६ शिक्षण संस्थानों से लगभग ५७०० इच्छुक छात्रों ने पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। २० समर्पित स्वयंसेवकों के एक दल ने इस विशाल आयोजन को काफी समय से पहले ही सुनियोजन कर लिया था। निबंधों को गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में लिखा गया। इसकी जाँच की प्रक्रिया पूरे जोर शोर से चालू है।

दक्षिण कर्नाटक में करीब ५०–६० स्वयंसेवकों ने राज्य भर के विभिन्न स्कूलों और कॉलजों में इस कार्यक्रम को आयोजित करने तथा उनके छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिये सम्पर्क किया। संस्थानों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली (विशेषकर स्कूलों से, उनमें से बहुत से इस कार्यक्रम में भाग लेकर काफी प्रसन्न थे क्योंकि वे बच्चों में मूल्यों को आत्मसात कराने के लिये कोई रास्ता ढूँढ रहे थे)। इस समय दक्षिण कर्नाटक में लगभग ६०० स्कूल और कॉलेज इस आयोजन में भाग ले रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ निबंध को चुनने का कार्य स्कूल, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर जल्द ही शुरू हो जायेगा।

## केन्द्र का विकास चित्तानूर, आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश के महबूबनगर जिले में चित्तानूर एक छोटा सा गाँव है। यह केन्द्र १९९१ में दो अभ्यासियों से शुरू हुआ था और अब यहाँ ३५ से ज्यादा अभ्यासी हैं। उनमें से अधिकतर खेतों में दैनिक मजूरी करने वाले मजदूर हैं। अभ्यासियों की बढ़ती हुई संख्या के कारण, अभ्यासी का वह निवास–स्थान छोटा पड़ने लगा, जहाँ वे मिलते थे। इस जरूरत को पूरा करने के लिए दो अभ्यासियों ने जमीन का एक छोटा टुकड़ा सरकार से खरीदा और गुरुदेव से मिशन की गतिविधियों के लिए एक हॉल (१८ फ़ीट x ३० फ़ीट) बनाने की अनुमति ली।

एक वर्ष बाद हॉल तैयार था और गुरुदेव ने रविवार, १६ अगस्त, २००९ को पहला सत्संग करने की अनुमति दी। निश्चय ही यह महबूबनगर के अभ्यासियों के लिए एक विशेष दिन था क्योंकि यह पूरे जिले में मिशन की गतिविधियों के लिए पहली इमारत है। सारे जिले से लगभग ७५ से ज्यादा अभ्यासियों ने इस आयोजन में भाग लिया और पूरे दिन सहज मार्ग को गहराई से समझने के लिये विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। एक वक्ता ने बहुत सटीक कहा कि चित्तानूर का ध्यानकक्ष एक मुख्य उदाहरण है कि कैसे इतने कम आर्थिक साधनों के होते हुये, अभ्यासियों के प्रेम, विश्वास और सच्चे प्रयास के बल पर ऐसी जगह को बनाना संभव हो पाया है।

## मंगलोर– कार्यशाला

मंगलूर केन्द्र में भाई मोहनदास द्वारा रविवार, ९ अगस्त २००९ को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें करीब ३५ अभ्यासियों ने भाग लिया।

सत्संग के बाद गुरुदेव की " ड्युटी एन्ड रेसपान्सिबिलिटी " ( कर्तव्य और जिम्मेदारी ) नामक डी वी डी चलाई गई। इसके बाद भंडारों में भाग लेने के महत्व और स्मरण द्वारा उस अवस्था को बरकरार रखने की जरुरत पर बल दिया गया।

चरित्र–निर्माण बहुत आवश्यक है, इस बात को समझाते हुए उन्होंने कहा कि हमें निम्नलिखित नियम को अपनाना चाहिएं– " अपने जीवन को ऐसे साँचे में ढ़ालें जिसे देखकर दूसरों के मन में प्रेम और करुणा के भाव पैदा हों। " लक्ष्य की प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए हमें चरित्र में परिवर्तन लाने के लिए अपनी इच्छा–शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।
मानव विकास में गुरुदेव की भूमिका और साधना में नियमितता; चर्चा के अन्य विषय थे। रात में सोने के समय की जाने वाली प्रार्थना का सही तरीका बताया गया। मिशन के विकास के लिए क्या–क्या कदम उठाए जाने चाहियें, इस पर नये–नये विचार पेश करने के लिए केन्द्र में एक सामूहिक परिचर्चा की गयी।

## भोपाल–मध्य प्रदेश के प्रशिक्षकों की बैठक

नौ साल के अन्तराल के बाद १५ अगस्त २००९ को भोपाल में इस बैठक का आयोजन किया गया। प्रशिक्षकों के काम से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों की समीक्षा की गयी और आने वाले महीनों के लिए दिशा तय की गयी।

- प्रशिक्षकों की व्यक्तिगत साधना और उनके अनुभवों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- मिशन के भीतर सूचनाओं के सहज आदान–प्रदान के लिए ई–मेल के उपयोग पर जोर दिया गया।
- ज़ोन में स्मृति की गतिविधियों की योजना बनाने और ज़ोनल गतिविधियों के कैलेंडर की समीक्षा की गयी।
- पी. पी. टी. के रूप में मुख्यालय द्वारा २००८ में जारी सुरक्षानिर्देश को लागू करने के बारे में सहभागियों को जानकारी दी गई।
- ज़ोनल प्रभारी भाई विकल्प ने:– विभिन्न गतिविधियों के संचालन में केन्द्र प्रभारी की भूमिका, आश्रम के निर्माण कार्यों का समापन, कॉर्पस सदस्यता, जन–सभायें, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, आसपास के केन्द्रों में प्रशिक्षकों का दौरा, प्रशिक्षकों की मासिक बैठक आदि ऐसे ही और विषयों की पूरी श्रंखला की समीक्षा की।
- भविष्य के लिए सम्पूर्ण नज़रिये को विकसित करने में भाई सचिन सिन्हा की "ज़ोन के लिये सपना" विषयक प्रस्तुति काफी सहायक सिद्ध हुई।

## इन्दौर

५ जुलाई, रविवार को इन्दौर केन्द्र ने ' मानव परिवर्तन' पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कई वक्ताओं ने कार्यक्रम से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर वार्ताएं दी। भाई सिन्हा नें ' अन्दुरूनी यात्रा ' नामक वार्ता में बताया कि किस प्रकार हमारी साधना निम्न स्तर के 'स्व' से हमें उच्च स्तर के 'स्व' में परिवर्तित कर देती है। भाई श्रीवास्तव ने 'प्रेम और भाईचारे' की भावनाओं को विकसित करने के महत्व के बारें में अपने विचार प्रस्तुत किये ताकि हम विश्व परिवर्तन के मालिक के स्वप्न का एक हिस्सा बन सकें। भाई अविनाश और भाई राजेश ने 'गुरुदेव के प्रति प्रेम' को, शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति का सबसे प्रभावशाली मार्ग बताया। प्रेम को उसके उचित व प्राकृतिक लक्ष्य 'ईश्वर' की तरफ मोड़ना चाहियें। ज़ोनल प्रभारी भाई विकल्प ने बहुत प्रेरणादायक पावर पाइन्ट प्रस्तुतियों, लघु फ़िल्मों और सृजनात्मक प्रश्नोत्तरी के साथ इस कार्यक्रम का समापन किया। आध्यात्मिक उन्नति पर परिचर्चात्मक सत्र से भी सहभागियों को काफी सहायता मिली। इस सत्र में ४०० से भी अधिक अभ्यासियों ने भाग लिया यह उपस्थिति सामान्यतः होने वाले पूरे दिन के कार्यक्रम से कहीं ज्यादा थी।

## नागपुर, महाराष्ट्र में अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

२८ जून २००९ को नागपुर केन्द्र ने विदर्भ क्षेत्र के अभ्यासियों के लिए एक दिन का स्मृति अभ्यासी प्रवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम के संचालन के लिए नासिक केन्द्र की बहन अनूसुया रामचन्द्रन को आमन्त्रित किया गया था।

नागपुर और सात निकटवर्ती केन्द्रों से करीब ३० अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें सारे दिन अभ्यासियों की रुचि बनाए रखने के लिए बड़ी कुशलता के साथ परिचर्चात्मक सत्र जोड़ें गए थे।
एक प्रश्नोत्तर–सत्र में बहन अनूसुया ने नये अभ्यासियों की भ्रांतियाँ दूर की। श्रोताओं की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी। उन्होंने फीडबैक फॉर्म में अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त किया। सभी अभ्यासियों ने कार्यक्रम को सराहा और नियमित रुप से ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। कुछ लोगों ने हमारी पद्धति में एक वर्ष से अधिक साधना करने वाले अभ्यासियों के लिए भी यह कार्यक्रम आयोजित करवाने की इच्छा व्यक्त की।

## उत्तर कर्नाटक में जन–सभा सत्र

उत्तर कर्नाटक में पिछले कुछ महीनों में कई जन–सभाओं का आयोजन किया गया। इन सत्रों का आयोजन ब्याड़गी, हावेरी, रानीबेन्नूर, गड़ग और गुलबर्गा में किया गया था। भाई काशमपुरकर, भाई गजेन्द्र और बहन सुजाता ने सहज मार्ग से सम्बन्धित विभिन्न विषयों जैसे मास्टर, मिशन और पद्धति के बारें में अपने विचार व्यक्त किये। इन सत्रों के बारे में अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई और अनेक लोगों ने मिशन में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की।

५ जुलाई को मदर टेरेसा डी एड कॉलेज, गुलबर्गा में भाई गौतम अल्लीपुर और भाई महेश देशपांडे ने कार्यक्रम का आयोजन किया। लगभग १०० विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। सभी ने बहुत ध्यान से सुना और बाद में उनके द्वारा पूछें गये बहुत से प्रश्नों का वक्ताओं ने स्पष्टीकरण किया।

ब्याड़गी के हावेरी जिले में, जो रानीबेन्नूर से २० किमी दूर है, एम. डी. एच. स्कूल के परिसर में २५ से ३० जिज्ञासुओं के लिये एक जन–सभा का आयोजन किया गया। स्कूल की प्राध्यापिका ने समाज में मूल्यों को वापिस लाने के लिये सहज मार्ग जैसे पथों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मिशन के तात्विक

परिचय के बाद सभी सहभागियों को वास्तविक साधना शुरू करनी चाहियें।

२७ जून को हावेरी के समुदाय भवन, जो हुबली से ७५ किमी दूर है, में बहन सुजाता केशव ने एक जन–सभा का आयोजन किया। लगभग २५ से ३० सहभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस सभा में महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज्यादा थी। देवनागरी के विनायक नाम के एक युवा अभ्यासी ने स्थानीय लोगों को लाने में अहम भूमिका निभायी उन्होंने सहज मार्ग में अपने अनुभव के बारे में बताया और परिवर्तन के बारे में मालिक के विचारों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का आयोजन भाई मायाचार द्वारा किया गया था, जो हावेरी के सूचना अफसर हैं।

रानीबेन्नूर; हावेरी जिले का एक बडा क्षेत्र है और हावेरी से ४० किमी दूर है। जे सी आई ( जूनियर चैम्बर इन्टरनेशनल ) जोकि मुख्य रूप से युवा उद्योगपतियों को मिलाकर बनाया गया संगठन है, के सहयोग से एक जन–सभा का आयोजन किया गया। लगभग ३५ जे सी आई के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का विषय था;– सहज मार्ग के अनुसार ध्यान।

जे सी आई की अध्यक्षा, जो स्वयं एक चिकित्सक हैं, ने अपनी समापन वार्ता में ध्यान की मुख्य धारणा को स्वीकार करते हुये मानव परिवर्तन की आवश्यकता पर जोर दिया।

६ जुलाई को गुलबर्गा में बहन हरिकुमारी चावड़ा के निवास–स्थान पर एक सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग १९ जिज्ञासुओं ने भाग लिया, जिनमें मुख्यत: गुजराती समुदाय की महिलायें शामिल थीं। बहन हरिकुमारी ने सहज मार्ग का परिचय दिया और बहन लक्ष्मी चौहान ने आध्यात्मिकता क्यों आवश्यक है और प्रत्यक्ष गुरु के महत्व के बारे में बताया। बहन रमोला चावड़ा ने सफ़ाई के बारे में जानकारी दी। यह कार्यक्रम बहुत ही पारिवारिक वातावरण में हुआ। सभी वार्तायें गुजराती में दी गयी थीं क्योंकि ज्यादातर श्रोता गुजराती भाषा समझते थे।

"यदि आपको कोई कठिनाई या उलझन होती है, या फिर भावना की असहनीय उत्तेजना, बस उसे प्रार्थना के माध्यम से किसी भी समय या कहीं से भी उनके सामनें रख दीजिये, और वह तुरन्त चली जायेगी।" दस स्पीक्स बाबुजी, पेज ३२

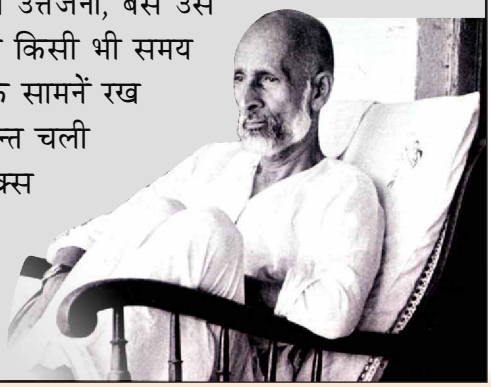

## सोलापुर, महाराष्ट्र में वी बी एस ई की पहल

सोलापुर केन्द्र ने स्मृति द्वारा निर्धारित पाठयक्रम के आधार पर कक्षा १ से ७ के विद्यार्थियों के लिये मूल्याधारित आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के नये प्रयास शुरू किये। माह में एक बार, किसी एक रविवार को इसके सत्र का आयोजन करके, इस पाठ्यक्रम को एक वर्ष में पूरा करने की योजना है।

१२ जुलाई २००९ को सिन्धु विहार क्षेत्र के बच्चों को ध्यानकक्ष में एकत्रित किया गया। बहन सुभदा और बहन छाया, जो व्यवसाय से अध्यापिका हैं, ने अनेक वीडियो की कहानियों द्वारा ५९ बच्चों को– कठिन परिश्रम का महत्व, एकता, भाईचारा, मित्रता और मिल–बाँट कर रहना आदि सिखाया। बहन स्नेहल ने कार्यक्रम में उनकी मदद की। कहानी के अन्त में बच्चों को दिखाई हुई कहानी का नैतिक सार बताने को कहा गया और सबको आश्चर्यचकित करते हुए उन्होंने यह दिखा दिया कि मौका मिलने पर वे बड़ों से भी अधिक कुशलता से कहानियों के पीछे छिपे अर्थ को समझ सकते हैं।

प्रतिदिन के शारिरिक व्यायाम के महत्व और आवश्यकता पर भी जोर दिया गया, जिस पर बच्चों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने अगले महीने होने वाले शारीरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपना नामांकन करवाया जिसका आयोजन युवा मंच के स्वयंसेवक करेंगे।

बच्चों के उत्साह से प्रोत्साहित होकर, स्वयंसेवकों ने भावी पीढ़ी के सुन्दर भविष्य हेतु ऐसे सत्रों के नियमित आयोजन करने की योजना बनाई। यह जानकर अत्यन्त हर्ष होता है कि सभी बच्चों ने, अभ्यासी परिवारों से न होते हुए भी, मिशन की प्रार्थना, अंग्रेजी में याद कर ली।

## आवासीय कैम्प– ज़ोनल आश्रम, तुम्कुण्टा, हैदराबाद

शुक्रवार, ७ अगस्त से रविवार, ९ अगस्त २००९ तक, पाँच वर्ष से पुराने अभ्यासियों के लिये एक आवासीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कैम्प का मुख्य उद्देश्य अभ्यासियों को उनके आत्मावलोकन करने के लिये प्रेरित करना और आजकल के संघर्षमय जीवन में सहज मार्ग के अनुसार जीने के तरीकों पर चर्चा करना था। कार्यक्रम में नियमित तथा बताये गये तरीके से साधना करने के महत्व पर जोर दिया गया और उन्हें छोटे समूहों में बाँटकर, उनके अभ्यास में समर्पण, वचनबद्धता और रुचि उत्पन्न करने के लिये व्यक्तिगत कार्य योजना बनाई गई।

अठ्ठारह युवा अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिन्हें काफी दबाब भरी जीवन–शैली, रात की नौकरी, रवैये की समस्या, इच्छाशक्ति की कमी या आलस्य आदि के कारण अपना अभ्यास नियमित रूप से करने में कठिनाई हो रही थी।

आश्रम में सभी सहज मार्ग पद्धति के अनुसार, सादे प्राकृतिक जीवन में उठने वाली परेशानियों और अपनी आन्तरिक भावनाओं को एक दूसरे से बाँटते हुये एक साथ रहे। एक–दूसरे के साथ खुलने के कारण वे आपस में ही अपनी परेशानियों के हल ढूँढने में एक–दूसरे की मदद कर सके। शान्ति से भरे पवित्र वातावरण में व्यक्तिगत सिटिंग का आयोजन किया गया। एक–एक कर सिटिंग लेने के कारण सबको साधना से सम्बन्धित प्रश्न पूछने का पर्याप्त समय मिला।

कार्यक्रम के अन्त में सभी सहभागियों ने बताया कि उन्हें व्यक्तिगत सिटिंग और अन्य अभ्यासी भाई–बहनों से बातचीत करके बहुत लाभ हुआ। सभी ने यह वचन लिया कि वे अपनी व्यक्तिगत साधना को और बेहतर करेंगे। साधना के प्रति अपनी समझ–बूझ के साथ सहभागियों ने मनुष्य से साधना में होने वाली गल्तियों के उपर एक हास्यास्पद, किंतु अर्थपूर्ण लघु–नाटिका प्रस्तुत की जिसने वहाँ का माहौल हल्का कर दिया। कार्यक्रम का समापन रविवार शाम को ६ बजे सभी सहभागियों और आयोजकों की समापन–वार्ता और विचारों के साथ हुआ।

## उस्मानिया मेडिकल कालेज में कार्यशाला

४ अगस्त २००९ को, उस्मानिया मेडिकल कालेज के परिसर में हैदराबाद केन्द्र की वी बी एस ई टीम ने, वहाँ के छात्रों के लिये तीन घण्टे की एक कार्यशाला का आयोजन किया। श्रोताओं में मेडिकल कालेज के २०० नये विद्यार्थी शामिल थे। प्रथम वक्ता ने प्रतिदिन के छोटे–छोटे उदाहरण प्रस्तुत कर ' जीवन के परिपेक्ष्य ' पर चर्चा की। द्वितीय वक्ता ने– अपने लिये व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने और उसको प्राप्त करने के रास्तों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने दृष्टिकोंण, साहस और मन को विनयमित करने की भूमिका पर भी चर्चा की। कार्यक्रम का समापन एक छोटी सी वीड़ियो की प्रस्तुति के साथ हुआ।

विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप पहले थोडा मन्द था ( क्योंकि यह उनका मेडिकल कॉलेज में दूसरा दिन ही था) किन्तु बाद में इसमें गति आ गयी। सामान्यतः ज्यादातर लोगों ने इस कार्यक्रम का हिस्सा होने पर अपनी कृतज्ञता व हर्ष की प्रतिक्रिया व्यक्त की। और कुछ अन्य प्रतिक्रियायें भी थी :

" इस कार्यक्रम ने मेरा जीवन बदल दिया है। "

" यह कार्यक्रम बहुत ही नाजुक समय पर आया है। "

" इस कार्यक्रम ने मुझे यह अहसास दिलाया है कि मैं क्या हूँ और इस समाज में मेरी क्या भूमिका है। "

" यह कार्यक्रम मेरे जीवन में पवित्रता लेकर आया है। "

" इस कार्यक्रम ने मुझे यह अहसास दिलाया है कि मेरी आत्मा ही सबसे महत्वपूर्ण चीज है। "

अनेक विद्यार्थियों ने ऐसे कार्यक्रमों को नियमित अन्तराल पर कराये जाने का आग्रह किया। इनमें से सबसे ज्यादा दिल को छू जाने वाली प्रतिक्रिया यह थी कि उन्होंने अन्य स्कूल और कालेज में, खासतौर पर गाँव और छोटे कस्बों में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित करने का आग्रह किया। इस प्रतिक्रिया से दूसरों के लिये उनके दिलों में दर्द के अहसास को साफ़ महसूस किया जा सकता था।

श्री राम चन्द्र मिशन
एकोज़ इंडिया
प्रकाश के केन्द्र
सितम्बर २००९ केवल निजी वितरण के लिये भाग २,अंक ५

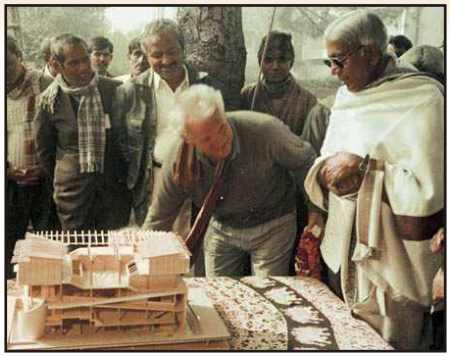

# आर. के. पुरम में दिल्ली आश्रम

दिल्ली केन्द्र की स्थापना १९५८ में हुई। काफी लम्बे अरसे तक राष्ट्रीय राजधानी में श्री रामचन्द्र मिशन की गतिविधियों के लिये कोई निश्चित स्थान नही था। ६ नवम्बर १९८६ को, दक्षिण दिल्ली के आर के. पुरम, सेक्टर ४ में दिल्ली प्रशासन से ९०० वर्ग यार्ड के टुकड़े पर कब्जा मिला। यह शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की सिफारिस से मुमकिन हो पाया। जिसने श्री रामचन्द्र मिशन को आधिकारिक तौर पर योग–प्रशिक्षण देने वाले शिक्षा–संस्थान के रूप में मान्यता दी। १९ नवम्बर १९८६ में गुरुदेव ने ज़मीन का मुआयना किया और अपनी धर्मपत्नी, बहन सुलोचना ( मामी ) के साथ परिसर में एक पौंधा लगाया।

३ फरवरी, १९८७ में बसंत–पंचमी के दिन गुरुदेव ने आश्रम की नींव रखी। इस अवसर पर उन्होंने कहा, " प्रेम रूप में नही बल्कि उसके अन्दर की वस्तु में निहित होता है, वैसे ही जैसे जब आप दुकान से कुछ खरीदते हैं, वह चाहे कितना ही खूबसूरती से पैक हो, लेकिन उसके अन्दर क्या है, वह मायने रखता है, नाकि बाहर का रूप। आखिरकार, बाहरी आवरण हम आधुनिक समाज में फाड़कर कूड़ेदान में ही फेंकते हैं। उसके अन्दर की वस्तु को हम सँभाल कर रखते हैं। यही गुरुदेव चाहते हैं हमारा अन्तरमन। "

जर्मनी के एक आर्किटेक्ट भाई ओटो स्टाइड़ल ने इस आश्रम को डिजाइन किया है। यद्यपि नक्शा १९८७ में ही तैयार हो गया था लेकिन उसकी स्वीकृति लेने में काफी लम्बा समय लग गया। इसीलिये अक्टूबर १९८७ में, आश्रम निर्माण के शुरू होने तक सत्संग उस जगह पर शामियानें के नीचे ही होता रहा। गुरुदेव, भाई एम. एम. कपूर के यहाँ सफदरगंज इनक्लेव में रुका करते थे और ज्यादातर डियर पार्क से गुजरते हुए आश्रम स्थल तक जातें थे। वें, विदेशी अभ्यासियों को स्वतन्त्र–विचरण करते हुए मोर दिखातें थें। उनमें से ऐसे ही एक अवसर पर एक बहुत ही खूबसूरत मोर अपने पूरे खुले हुए पंखों के साथ विपरीत दिशा में मुँह किये खड़ा हुआ था और गुरुदेव उसके सामने का रंग–बिरंगा भाग अभ्यासियों को दिखाना चाहते थे। उन्होंने मंद आवाज में फुसफसाया: " मुड़ो " और मोर ने तुरन्त आज्ञापालन किया।

चुँकि जगह बहुत छोटी थी, इसीलिये इमारत का निर्माण चार स्तर पर किया गया। और बेसमेंट को आने वाले अभ्यासियों को ठहराने के लिये इस्तेमाल किया गया। १३ अक्टूबर १९९१ में गुरुदेव ने बेसमेंट में पहला सत्संग करवाया। ग्राउंड फ्लोर व गैलरी को पूजा के दौरान बैठने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। दूसरे माले पर गुरुदेव के लिये दो कमरों का एक अपार्टमेंट है जिसमें गुरुदेव पहली बार २ दिसम्बर, १९९२ में रुकें।

जब पहले माले की छत पर लिन्टर के लिये सरियें ड़ाले गये थे, गुरुदेव; स्वयं उसका मुआयना करने ऊपर गये। बाधँने वाले तार के बाहर निकले हुयें टुकड़े से उनकी अगुँली कट गई और थोड़ा खून भी बहा। उन्होंने हल्के अन्दाज में इसे लेते हुये कहा, "अच्छा हुआ कि मुझे थोड़ी सी चोट लग गई, नही तो यहाँ पर काम करने वाले किसी व्यक्ति को गम्भीर चोट लग जाती।"

आश्रम के निर्माण के साथ ही यहाँ अभ्यासियों की संख्या ४० से ३०० हो गई। इसका निर्माण–कार्य १९९२ में पूरा हुआ। स्थानीय अभ्यासियों ने दिल खोलकर दान दिया और निर्माण–कार्य में विशेषज्ञता भी प्रदान की। यह आश्रम, गुरुदेव के उत्तर भारत व विदेश के दौरों में पड़ाव की तरह उपयोग होता रहा है। १९९८ में इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में आयोजित, गुरुदेव के जन्म दिवस समारोह के दौरान यह आश्रम गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बना रहा। यह आश्रम मुख्यतः आर. के. पुरम आश्रम के नाम से जाना जाता है क्योंकि गुड़गाँव में स्थित पाम फार्मस में जोनल आश्रम है जोकि पड़ोसी राज्य हरियाणा में है। इसका पंजीकरण १५ जून, २००१ को हुआ।

आर. के. पुरम आश्रम, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन और पालम हवाई–अड्डे से लगभग १५ किलोमीटर की एक समान दूरी पर है। अच्छी जगह पर होने के कारण, यह सतखोल आश्रम जाने–आने वाले अभ्यासियों के लिये अत्यन्त सुविधाजनक केन्द्र है।

**To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india**
**For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org**

© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.